कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ...... हिन्दी (अनिवार्य)

परीक्षा का दिन..........

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जावेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ...... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 158/2016

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) यन्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जाँच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ.1

(अ) "विचार लो कि मर्त्य हो" से कवि का आशय यह है कि मनुष्य का जीवन मरणशील है। मृत्यु जीवन का शाश्वत सत्य है अतः यदि मनुष्य को निर्भीक होकर समाज कल्याण का कार्य करना हो तो उसे अपनी मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। मनुष्य को पहले ही यह निश्चित कर लेना चाहिए उसकी मृत्यु अवश्य होगी।

(ब) पशु सिर्फ अपना पेट भरने के लिए कार्य करता है। पशु की यही स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति है। वर्तमान में मनुष्य भी इसी स्वार्थ से ग्रस्त है। अतः परमार्थ त्याग कर सिर्फ अपने बारे में सोचना, स्वयं के लिए कार्य करना पशु प्रवृत्ति है।

(स) जो मनुष्य स्वार्थी न हो, समाज के विकास और भलाई के लिए कार्य करे उसी मनुष्य की कीर्ति संसार में गूंजती है। अर्थात वह मनुष्य जो दूसरों के लिए अपना हित छोड़ कर उन्हीं की भलाई में लगा रहे, वही अमर कहलाता है।

(द) "वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे" में स्वार्थरहित तथा परोपकारी भाव निहित है। इसमें उस व्यक्ति को मनुष्य की उपमा दी है जो दूसरों के हित के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने में भी संकोच न करे। ऐसा मनुष्य मानवता के भाव से परिपूर्ण होता है।

उ.2

(अ) राष्ट्रीय जागरण के लिए राष्ट्रीय चरित्र का विकास करना आवश्यक है जिसके लिए युवा पीढ़ी के विकास तथा राष्ट्र की आत्मा को जगाना आवश्यक है। युवा पीढ़ी में

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

राष्ट्र प्रेम, स्वावलंबन, अनुशासन तथा मानवता अपनाना अनिवार्य है। तभी राष्ट्रीय चरित्र तथा राष्ट्रीय जागरण संभव है।

ब. सरल वाक्य → तेजी से आसानी की ओर प्रवृत्ति के कारण स्वतंत्रता के पश्चात आज हमारी कठिनाईयों मे भी बढ़ी है वृद्धि हुई है।

स) स्वावलम्बी = स्व + अव + लम्ब + ई
उपसर्ग = स्व, अव
मूल शब्द = लम्ब
प्रत्यय = ई

द) शीर्षक — "राष्ट्रीय चरित्र का विकास।"

4.

ध्वनि विस्तारक यंत्र - अनुचित प्रयोग

3 मार्च 2016 | अजमेर | दिन-प्रतिदिन समाज मे ध्वनि विस्तारक यंत्र बढ़ते जा रहे है। इनकी कटु ध्वनि बिल्कुल भी कर्णप्रिय नही है। अजमेर शहर मे जगह जगह होटल, रेस्तराँ तथा धार्मिक स्थल है जहाँ भजन कीर्तन, लाउडस्पीकर इत्यादि बजते रहते है। ध्वनि प्रदूषण की समस्या का यह एक प्रमुख कारण है। पिछले दशक से एक स्वयं सेवी संस्थान के अनुसार अजमेर शहर मे इस तरह के आयोजनो की संख्या मे 83% वृद्धि हुई है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इस प्रकार के यंत्रों का प्रयोग समाज के नागरिकों के जनजीवन में खलल डाल रहा है। इसके कारण वृद्ध नागरिक काफी परेशान हैं। अभी परीक्षा का समय चल रहा है। ज्यादातर विद्यार्थीगण अपनी परीक्षाओं में व्यस्त हैं। ये ध्वनि विस्तारक यंत्र अध्ययन में बाधा डालते हैं। विद्यार्थी अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहे। पिछले वर्ष तो इस समय में इन यंत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था परन्तु वर्तमान में ऐसी कोई सूचना नहीं आई है। जिसका परिणाम नागरिकों की परेशानियाँ हैं। कई स्थानों पर इनका प्रचलन इतना बढ़ गया है कि श्रवण समस्याएँ भी सामने आ रही हैं। विवाह समारोहों तथा अन्य आयोजनों में रात्रि 10 बजे के बाद भी लाउड स्पीकर बजते रहते हैं। पुलिस प्रशासन भी इस विषय पर कोई कदम नहीं उठा रहा।

इन यंत्रों से ध्वनि प्रदूषण बढ़ रहा है जिसकी वृद्धि पिछले पाँच वर्षों 12% की दर से संभावित है। विद्यार्थी, वृद्धगण, मरीजों इत्यादि की समस्याएँ आज भगवान भरोसे हैं। न जाने कब प्रशासन की आँखें खुलेंगी और इस समस्या से निदान मिलेगा।

प्र. 6

किसानों की समस्याएँ

दुबला-पतला, असहाय, हाथों में हल, शरीर में ढाँचा, खाल, पेट के नीचे बीच खड़ा है – वही है किसान।

यूँ तो किसान को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है परन्तु फिर भी आज इसकी दशा इतनी दयनीय हो गई है कि वह आत्महत्या करने पर मजबूर है। आज किसान साहूकारों के कर्ज में दबा पड़ा है। वर्तमान

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

समय की स्थिति को देख कर कहा जा सकता है कि किसान कर्ज में ही जन्म लेता है और कर्ज में ही मर जाता है। किसानों की समस्याओं से सभी अवगत है परन्तु फिर भी किसानों की इन समस्याओं को देख कर भी अनदेखा कर दिया जाता है। सरकारी नीतियाँ किसान को एक बेहतर जीवन व आय का वायदा करती है। लेकिन ये वादे और नीतियाँ सिर्फ कागजों में दबी रहती है। लाल फीताशाही के कारण किसानों को अनुकूल लाभ नहीं मिल पाता है। हमारे देश कृषि प्रधान देश है जिसकी लगभग 70% जनता कृषि में लगी थी। परन्तु आज किसान स्वयं कृषि से दूर भाग रहे है तथा जो मुश्किल से कृषि में लगे है उनके जीवन का अंत आत्महत्या दिखाई दे रहा है। किसानों को सरकार बिना गारंटी के लोन दिलाती है, दूरदर्शन जैसे कार्यक्रमों से उनको ज्ञान बढाती है फिर भी लोग साहूकारों और जमींदारों के चंगुल में फंस जाते है। किसान समाज का पोषक है। अपनी अज्ञानता तथा गरीबी के कारण उसका जीवनस्तर लगातार गिरता जा रहा है। आज किसान के पास भर पेट खाना अपना घर चलाने के लिए भी धन नहीं है। इससे बड़े दुर्भाग्य की बात हमारे लिए क्या हो सकती है?

5.8 सचमुच ... तुम्हें प्यारा है।

(अ) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि गजानन माधव मुक्तिबोध ने अपनी प्रिय की ममता, स्नेह का उल्लेख किया है वह उसे भूल जाने का दंड मांग रहा है। क्योंकि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | परीक्षार्थी उत्तर

कवि के अनुसार उसके जीवन पर प्रिय की ममता की छाया छायी हुई। यह स्नेह उसकी आत्मा को भीतर ही भीतर डरा रही है। कवि को यह भय है कि यदि भविष्य में कोई आपदा, संकट आया तो प्रिय के प्रेम के अभाव में वह उसे नहीं सह सकेगा। स्नेह के बिना कवि उसका सामना नहीं कर सकेगा।

ब) कवि दंड रूप में एकांत तथा वीरान स्थानों पर जाना चाहता है जहाँ उसे कोई न देखे। कवि दिशाओं धुलों, पातालों गुफाओं, अंधकारमय स्थलों में जाना चाहता है। वह एकदम एकांत में जाना चाहता है जिससे आसानी से प्रिय को भूल सके।

स) कवि जीवन की सभी सुखद - दुखद स्थितियों को स्वीकारता है। उसका कारण उसकी प्रिय की ममता, स्नेह है। कवि का मानना है कि उस जीवन में जो कुछ भी है वह प्रिय के प्रेम का परिणाम है। उसी प्रेम से वशीभूत होकर वह खुशी खुशी सभी चीजों को स्वीकार लेता है।

द) 'वह तुम्हारे ही कारण कार्यों का घेरा है" का आशय है कि प्रिय की आत्मीयता, उसका प्रेम ही कवि के समस्त जीवन का आधार है। कवि अपने जीवन के दुखों, सुख हर्ष - अवसाद, उतार - चढ़ाव तथा सफलताओं असफलताओं का कारण अपनी प्रिय को ही मानता है। कवि का जीवन प्रिय के कार्यों पर पूरी तरह आश्रित है।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ.9 मैं निज .... फिरता हूँ।

(अ) भाव -7 प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने हरिवंश राय
प्र बच्चन ने इस संसार को अपूर्ण बताते हुए संसार से स्वयं को संबोध प्रीति कहकर बताया है। कवि सदा अपने हृदय में प्रेम का भाव लिए फिरता है। उसकी इच्छा दूसरों को प्रेम बाँटने की है। वह इस संसार में प्रेम का संचार करना चाहता है। यह संसार राग द्वेष, स्वार्थ व नफरत से भरा है अतः कवि अपनी स्वप्नों, स्वतंत्र कल्पनाओं के संसार में ही विचरण करता है। इसी प्रेम मय संसार को स्वप्नों का संसार बताया है।

(ब) शिल्पगत विशेषताएँ :

☆ भाषा सरल व सहज है।
☆ कवि ने खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग किया है।
☆ "स्वप्नों का संसार" में अनुप्रास अलंकार की छटा है।
☆ कवि की कविता में गेयता तथा तुकबंदी का गुण है।
☆ प्रस्तुत पंक्तियों में लक्षणा शक्ति है।

उ.10
(अ) "तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया" यह कथन पतंगों तथा शरद ऋतु में पतंगबाजी के लिए अनुकूल वातावरण को कहा है। कवि ने बाल सुलभ कल्पनाओं का सजीव चित्रण किया है। शरद ऋतु में जब आसमान में रंग-बिरंगी, विभिन्न आकारों की पतंगे पूरे उत्साह के साथ उड़ाते हैं जिससे पूरा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

आकाश रंग रंग बिरंगी पतंगो से भर जाता है। इसी को तितलियों की दुनिया की उपमा दी गई है।

(स) "स्लेट पर या लाल खड़िया-चॉक मल दी हो किसीने"
प्रस्तुत पंक्तियों में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने सूर्योदय के ठीक पहले पल-पल परिवर्तित वातावरण का चित्रण किया है। कवि को सूर्योदय से पूर्व का यह आकाश काली स्लेट के समान साफ व निर्मल प्रतीत हो रहा है। वातावरण में हल्की-हल्की लालिमा आ गई है जिसके कारण ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी ने "अदृश्य हाथों से स्लेट पर चॉक (लाल) मल दी हो"। यहाँ कवि ने सूर्योदय का चित्रण जीवंत परिवेश के रूप में किया है।

11. सेवक धर्म ... अमर हो उठी।"

(ख) लेखिका महादेवी वर्मा ने भक्तिन को हनुमान जी से स्पर्धा करने वाली बताया है क्योंकि जिस प्रकार हनुमान जी श्री राम की सेवा में पूरी लगन तथा श्रद्धा से लगे रहते थे उसी प्रकार भक्तिन भी महादेवी की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ती थी। उसके सेवा भाव, कर्तव्यनिष्ठा तथा लगन से प्रभावित होकर लेखिका ने भक्तिन को हनुमान के समान बताया।

(ग) "जीवन में कभी-कभी अपने नाम का विरोधाभास झेलना पड़ता है" इसका आशय है कि सभी लोगों के नाम उनकी स्थिति तथा गुणों के अनुसार नहीं होते। वे नाम उस व्यक्ति के विपरीत होने के कारण हास का विषय ही बनते हैं जैसे धनीलाल बहुत गरीब, सुखराम सदैव

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कुली तथा चोर उचक्के ही इत्यादि।

(स) लक्ष्मी नाम भक्तिन के जीवन के विपरीतार्थ था। वह अपने जीवन में सदैव गरीब ही रही। परन्तु जब उसकी वेशभूषा, कंठी आदि देखकर लेखिका ने उसे भक्तिन नाम दिया तो वह खुशी से उछल पड़ी। यह नाम उसे चारित्रिक विशेषताओं के अनुकूल ही था। अतः यह नाम उसे पसंद आया।

प्र.12

(अ) "शिरीष के फूल" के माध्यम से लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने संघर्षशीलता एवं जिजीविषा की व्यंजना की है। शिरीष का फूल ही ऐसा ऐसा वृक्ष है जो लू गर्मी सभी सहकर भी मुरझाता नहीं है वह सुबह सदैव खिला रहता है। वसंत पर प्रथम पुष्प लगते हैं जो आषाढ़ तक टिका रहता है जबकि अन्य मुरझा जाते हैं। इसी प्रकार की जिजीविषा की कल्पना मनुष्य में भी होनी चाहिए। कवि लेखक ने जीवन में आने वाली विषम परिस्थितियों में अडिग रहने, संघर्षशील बने रहने की प्रेरणा दी है। मनुष्य को परिवर्तन को स्वीकार करते हुए सदैव आगे बढ़ते रहना चाहिए कभी भी आलस्य तथा अकर्मण्यता से ग्रस्त नहीं होना चाहिए तभी वह जीवित रह पाता है।

इसी कारण शिरीष के फूल में लेखक ने धैर्य, कर्तव्यनिष्ठ, लगनशीलता, परिश्रम, संघर्षशीलता तथा जिजीविषा जैसे मूल्यों का समावेश किया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

परीक्षार्थी उत्तर

(अ) 'नमक' कहानी रजिया सज्जाद जहीर की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है जिसमें विस्थापितों के दुख दर्द तथा उनकी संवेदना को व्यक्त किया गया। सिर्फ एक लकीर मानचित्र पर खींच देने से राष्ट्र, राज्य का बंटवारा हो जाता है लेकिन लोगों का बंटवारा नहीं होता। जन्मभूमि से लगाव सदैव ही बना रहता है। तथा विस्थापन का यह दुख जीवन भी सताता है। सिख बीबी, रजिया, पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी तथा सुनीलदास का मातृप्रेम इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। "देश की सरहदें राजनैतिक यथार्थ पर बदलती हैं हृदय के यथार्थ पर नहीं।" देशों के बीच मतभेद यद्यपि सिर्फ राजनैतिक स्तर पर है। इसके विपरीत आम जनता तो सद्भाव व भाईचारा ही चाहती है। विस्थापना का यह दुख ही कहानी की मूल संवेदना है और नमक बस प्रेम की पहचान है जो आम जन में घुला हुआ है।

(ब) "जाति प्रथा आर्थिक दृष्टि से भी हानिकारक है। जाति प्रथा के अंतर्गत प्रत्येक मनुष्य को एक निश्चित पेशे से बांध दिया जाता है उसे अपना पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती है। हिन्दू धर्म मान्यता के अनुसार मनुष्य को पैतृक पेशा ही अपनाना पड़ता है भले वह अन्य किसी क्षेत्र में पारंगत हो अथवा नहीं। इस प्रकार के पेशा निर्धारण में व्यक्ति की रुचि एवं योग्यता नहीं होती है जिस कारण वह उस पेशे में अपना विकास नहीं कर पाता। न ही आवश्यक आर्थिक लाभ कमा पाता है। जिससे उसके सामने आर्थिक संकट आ जाता है व भुखमरी की स्थिति आ जाती है।

बेरोजगारी और गरीबी का एक प्रमुख कारण यह रूढ़िवादी जातिप्रथा भी है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ.14

(अ) 'प्रकृतिही एक ऐसा वरदान है जिसका कोई सानी नहीं है' ऐन फ्रैंक का यह कथन उसके प्रकृति प्रेम को दर्शाता है। ऐन को प्रकृति गहराई से प्रभावित करती है। उसके अनुसार संसार मे ऐसी कोई चीज नही जो प्रकृति के समान हमे आनंद व शान्ति प्रदान करे। प्रकृति गरीब, अमीर मे भेद नही करती वह निष्पक्ष तथा लगातार हृदय को सौन्दर्य व प्रेम प्रदान करती है।

(ब) लेखक आनंद यादव के द्वारा जीवन से हमे यह शिक्षा मिलती है सभी बच्चों का शिक्षा का मौलिक अधिकार अवश्य मिलना चाहिए। माता पिता को अपने बच्चो को पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। एक बालक को स्वयं पूरी लगन व मेहनत से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। ऐसे कठिन परिस्थितियों से घबराए बिना उनका साहस के साथ सामना करना चाहिए।

उ.15

(अ) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में मनोहर श्याम जोशी ने पीढ़ी के अंतराल तथा पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण का उल्लेख किया गया है। यहा नयी विचारधाराओ तथा रूढ़िवादी विचार के बीच पारस्परिक द्वंद दर्शाया गया है। लेखक के अनुसार परिवर्तन संसार का नियम है। लोगो को अपनी पुरानी मान्यताओ को लिपटे रहने की बजाय नयी पीढ़ी की विचारधाराओ

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

का सम्मान करना चाहिए। हमें नयी पीढ़ी के दृष्टिकोण को समझने तथा उसे अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

लेखक यहाँ यह संदेश देता है कि हमें नई मान्यताओं को अपनाना अवश्य चाहिए परन्तु पुराने तर्कसंगत मूल्य नहीं छोड़ने चाहिए। पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करें परन्तु अंधानुकरण न करें। इसी होड़ में हमें मनुष्य को मनुष्य बनाने वाले मूल्य नहीं छोड़ने चाहिए। हमें हमारी संस्कृति व सभ्यता का सम्मान करना चाहिए तथा बड़ों का आदर व उनकी सलाह माननी चाहिए।

(ख) "जूझ" आत्मकथात्मक अंश में आनंद यादव ने अपने जीवन में आए संघर्षों का उल्लेख किया। पढ़ाई के लिए जूझता एक बालक और जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उसकी कठिनाइयाँ आदि पाठ की मूल संवेदना है। प्रस्तुत अंश में उस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का वर्णन किया गया है जिसमें ग्रामीण परिवेश के बालक शिक्षा से वंचित, असहाय रह जाते हैं। शिक्षा एक ऐसी चीज है प्रत्येक मनुष्य को अवश्य मिलनी चाहिए परन्तु आनंद को सबसे पहले अपने पिता, विद्यालय के वातावरण, कविता लेखन, कृषि कार्य इत्यादि जगह संघर्ष करना पड़ा। इन सभी संघर्षों का कारण मात्र यह था कि वह बालक पढ़ लिख कर अपने जीवन में कुछ बनना चाहता चाहता था।

ग्रामीण परिवेश का पिछड़ापन, शिक्षा से वंचित रहना माता-पिता की रुकावट, बालक की पढ़ाई के प्रति चाह ही मूल संवेदना का विषय है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र.15 सिल्वर वैडिंग कहानी मे पुरानी तथा नयी पीढ़ी के अंतराल का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है। जिसमे यशोधर बाबू पुरानी मान्यताओं से चिपके रहे है वे आधुनिक नही बन सके वही दूसरी और पूरा परिवार नए जमाने के थे वे नयी विचारधाराओ से पोषित थे। इस खिंचाव के अंतर के कारण पूरा यशोधर का अपने परिवार से मतभेद रहता। वे अपने बच्चो की प्रगति से खुश थे। एक बेटा आई.ए.एस, दूसरा विदेश मे पढ़ रहा था। परन्तु उनके अनुसार ऐसी प्रगति ही क्या जो अपनो को पराया कर दे। अर्थात वे अपने बच्चो से प्रेम, सम्मान की अपेक्षा रखते थे। वे चाहते थे कि बच्चे उनके अनुभव का आदर करे। उनसे विभिन्न विषयो मे सलाह ले।

वे अपने बच्चो को अपने अनुसार चलाना चाहते थे। यशोधर चाहते थे कि उनके बच्चे भी उसी तरह परिवार जनो से रिश्ता बनाए रखे। सांस्कृतिक रीतियो का आदर करे। अपने सगे-संबंधियो के साथ भी अच्छा संबंध बनाए रखे।

यशोधर की ये सभी अपेक्षाएँ थी क्योकि वे स्वयं को परिवार का एक मुखिया, सम्मानित बुजुर्ग मान रहे थे। उनके बच्चो ने ये अपेक्षाएं काफी हद तक पूरी नही की। फिर भी यशोधर "समहाउ इंप्रापर" की स्थिति का साथ संतुष्ट व अनिर्णय की स्थिति मे रहते।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ.5

प्रेषक -
श्रीमान प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
चौरू (राजस्थान)

प्रेषिति -
निदेशक महोदय
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर (राजस्थान)

दिनांक - 5 मार्च 2018
पत्रांक - 1023/ रा उ मा/1120 क्र.नं.
विषय - व्याख्याता के रिक्त पदों को भरने हेतु

महोदय
प्रधानाचार्य की ओर से आपको सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय में पिछले 18 दिनों से व्याख्याता के कुछ पद खाली पड़े हैं जिससे विद्यालय की अध्ययन व्यवस्था में बाधा पड़ रही है। आप व्याख्याताओं की शीघ्र अतिशीघ्र व्यवस्था करें जिससे छात्रों को कोई असुविधा न हो व परीक्षा परिणाम भी प्रभावित न हो सके। अंग्रेजी व गणित विषय के व्याख्याता की आवश्यकता है। उपयुक्त भर्ती होने तक विद्यालय में अल्पकालीन शिक्षकों की नियुक्ति कीजिए। शीघ्र अतिशीघ्र व्याख्याता पदों की सूची भिजवाएँ।
रिक्त पदों के कारण विद्यार्थी अपना समय कैंटीन व पुस्तकालय में बिता रहे हैं। जिससे कई विद्यार्थियों ने तो विद्यालय में आना भी बंद कर दिया

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

है। आशा है आप विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए कार्यवाही करेंगे।
धन्यवाद

पत्रांक - 1023 / क 801 / 1120 क स.
दिनांक - 5 मार्च 2016
प्रधानाचार्य (राजकीय उ.मा विद्यालय)
पुर (राजस्थान)

प्र. 9

शहर में बढ़ता प्रदूषण

प्रदूषण आज की ज्वलंत समस्याओं में से एक ही भारी और प्रदूषण ही प्रदूषण फैला हुआ है प्रदूषण भी कई प्रकार का ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण इत्यादि। आज हमारा शहर प्रदूषित होता जा रहा है। यह प्रदूषण इतना बढ़ गया है हमारा यह शहर शीघ्र ही महानगर को भी पछाड़ देगा। कारों से निकला धुआँ, कारखानों की गंदगी, अपशिष्ट इत्यादि प्रदूषण के कारण ही हमारे स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाला यह प्रदूषण का राक्षस शीघ्रता से अपनी पैठ फैला रहा है। प्रदूषण से कई बीमारियाँ होती हैं जैसे वायु प्रदूषण से श्वास संबंधी बीमारियाँ, त्वचा संबंधी बीमारियाँ, ध्वनि प्रदूषण से तनाव, चिंता, श्रवण समस्या आदि। दूषित जल पीने से डायरिया, हैजा जैसे गंभीर बीमारियां। जैसे-जैसे प्रदूषण बढ़ रहा है वैसे वैसे बीमारियाँ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

आज मनुष्य ने प्रकृति पर विजय पा ली है। हम कह सकते हैं कि

यह संसार है विचित्र नवीन, प्रकृति पर मनुष्य है आसीन है इसके करों में विद्युत, भाप, हुक्म पर चढ़ता उतरता ताप इन सभी ने प्रदूषण की समस्या को और अधिक बढ़ा दिया है। प्रदूषण को रोकने के लिए सरकार ने कई नियम बनाए हैं। कई जगह जागरूकता कार्यक्रम होते हैं। हम सभी 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाते हैं। परन्तु क्या इस एक दिन से पर्यावरण प्रदूषण रुक जाएगा। अवश्य ही नहीं। प्रदूषण तो तब रुकेगा जब मनुष्य इसके लिए कार्य करेगा। प्रदूषण को रोकना सिर्फ सरकारी नीतियों के वश की बात नहीं है। पिछले एक दशक से प्रदूषण में जितनी वृद्धि हुई है वह अब तक कि सबसे अधिक वृद्धि दर है। प्रदूषण को रोकने का सबसे श्रेष्ठ उपाय वृक्षारोपण है। वृक्ष प्रकृति को नया जीवन दान देते हैं। यदि मनुष्य अपनी आदतों को सुधार ले तो प्रदूषण को अवश्य रोका जा सकता है। जैसे कारखानों को शहर से दूर स्थापित करना, जल में अपशिष्ट तथा कचरा न डालना, वायु को शुद्ध रखना, वाहनों का प्रयोग कम से कम करना, प्लास्टिक दहन न करना इत्यादि इत्यादि।

इस प्रकार प्रदूषण रोका जा सकता है। प्रदूषण की इस समस्या की वृद्धि को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि प्रदूषण रोकना आज की आवश्यकता नहीं बल्कि अनिवार्यता है।

दिल्ली को सबसे अधिक प्रदूषित शहर का दर्जा दिया गया है। यदि हमने आवश्यक कदम नहीं उठाए तो शीघ्र ही दिल्ली के स्थान पर हमारे शहर का नाम शीर्षस्थ होगा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3

कन्या - भ्रूण हत्या — मानवता पर एक कलंक

रूपरेखा

1. प्रस्तावना
2. कन्या भ्रूण हत्या - अर्थ
3. कन्या भ्रूण हत्या - व्यापकता व कारण
4. वर्तमान स्थिति व प्राचीन स्थिति
5. निराकरण के उपाय
6. उपसंहार

1. प्रस्तावना →

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
रमन्ते तत्र देवताः।

भारतीय संस्कृति मे नारी को देवी का दर्जा दिया गया है। हमारा समाज इस लोक प्रथा को मानता है। कि जहाँ नारियों का वास है, जहाँ नारियों को सम्मान मिलता है वहीं देवगण निवास करते है। भारत की सांस्कृतिक तथा सभ्यता की विरासत मे नारी को जननी का सबसे ऊँचा दर्जा प्राप्त है। तो फिर आज ऐसी स्थिति क्यो है। कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, सतीप्रथा तथा पर्दा प्रथा आदि नारियों की गरिमा के विरुद्ध कुछ रीतियां है। इनमें से कन्याभ्रूण हत्या एक ऐसा अभिशाप है जो संसार मे लड़की को जन्म भी नहीं लेने देता। यह ऐसा अक्षम्य पाप है जो आज एक चिंता

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

का विषय बन गया है। समाज मे कन्या - भ्रूण हत्या की गंदगी इस तरह फैली हुई है कि आज लड़कियाँ सर्वाधिक असुरक्षित है।

(२) **कन्या - भ्रूण हत्या - अर्थ :**

कन्या - भ्रूण हत्या का आशय कन्या को जन्म से पूर्व ही माता के गर्भ मे मार देना। कुछ अमानव भ्रूण की जाँच करवाते हैं तथा यदि लड़की हो तो उसे मार देते हैं। क्या विज्ञान की प्रगति इतनी हो गई है कि हमारी मानसिकता नीचे गिर चुकी है? अल्ट्रासाउंड मशीन तथा अन्य विज्ञान की ऐसी खोजें जिससे लिंग का पूर्व निरीक्षण करा जाता है ऐसी तकनीकि कन्या - भ्रूण हत्या का कारण है जो विज्ञान को एक अभिशाप बना रही है। कन्या भ्रूण हत्या से हम सभी परिचित है। ग्रामीण क्षेत्रों मे कई लोगों को तो इस बात का भी ज्ञान नही होता है कि यह कन्या - भ्रूण - हत्या एक अपराध है जिसके कारण कैद सजा हो सकती है। सरकार ने इसके विरुद्ध एक सख्त नियम बनाया है परन्तु फिर भी यह नियम , नियम ही बना रह गया।

कई लोग अपनी अज्ञानता तथा रूढ़िवादी सोच के कारण ऐसे कार्य करते हैं। अज्ञानता तो फिर भी एक कारण माना जा सकता है लेकिन हमारे देश के वे नागरिक जो शिक्षित हैं अर्थात लिंग जाँच करने वाले डॉक्टर्स वे यह पाप क्यों करते हैं। कन्या भ्रूण हत्या के संदर्भ मे यह कहना सर्वथा उचित है

"मर्ज बढ़ता ही गया
ज्यों ज्यों दवा की ॥"

हम लाख कोशिशों के बाद भी इस पर लगाम नही

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

लगा पा रहे हैं।
और देश के कमाव मे यह कुकृत्य रुकने का नाम भी नही ले रहा। यदि वास्तव मे इसे न रोका गया तो यह स्थिति दूर नही जब लड़कियो की संख्या हमारे समाज मे सबसे कम हो जाएगी कि मानव जाति का अस्तित्व ही संकट मे पड़ जाएगा। क्योंकि नारी ही तो जननी है। और संसार की जन्मदायिनी है।

3. कन्या भ्रूण हत्या - कारण
लोग अपनी ही संतान को मार रहे हैं। एक माँ स्वयं इतनी कठोर कैसे हो सकती है जो अपनी संतान को संसार मे आने से पहले ही मार दे। इस स्थिति के बहुत से कारण है जैसे:-

☆ हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है जहाँ अभी भी लड़का तथा लड़की को समान अधिकार नही मिले है।

☆ लड़कियो को पराया धन मानने वाली वह पुरानी सोच इसका मुख्य कारण है। जिसमे दहेज के भय से लोग अपनी संतान को एक लड़की के रूप मे स्वीकार नही करते।

☆ ज्यादातर लोगो की मान्यता यह है कि लड़का बुढ़ापे का सहारा बनता है। तथा वंश को आगे बढ़ाता है।

☆ लड़का लड़की मे भेदभाव हमारे समाज का मुख्य आधार बना हुआ है। ऐसा आधार जिसका कोई तर्क नही।

☆ ग्रामीण समुदायो मे लड़कियो के साथ इतना हीन तथा भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है कि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इन सभी कारणों के परिणाम स्वरूप लोग भगवान से बेटी नहीं बेटे की चाह करते है। एक मशहूर कवि ने कहा है

घर में खुशियाँ लाती हैं बेटियाँ
धूप छाँव में खिलखिलाती हैं बेटियाँ।
माँ, बाप, बेटे को संभालती और
दो घरों को सजाती हैं बेटियाँ।

नारियों में सहनशीलता ममता का गुण होता है जिसके बल पर वह सभी कार्यों आसानी से कर सकती है। लोगों की सोच आज भी 50 वर्ष पूर्व की है। इन रूढ़िवादी विचारधाराओं के वशीभूत होकर भी वे लड़कियों को लड़कों से कम आँकते हैं और उन्हें जीवन का एक अवसर भी प्रदान नहीं करते। माँ जो स्वयं एक नारी है वह कैसे किसी कन्या का गला घोंट सकती है यह ऐसा प्रश्न है जिसका जवाब आज तक समझ से बाहर है।

☆ प्राचीन तथा वर्तमान स्थिति :-

प्राचीन स्थिति -> प्राचीन समय में नारियों का जीवन घर की चार दिवारी तक सीमित था। तथा इस स्थिति में कन्या भ्रूण के ऊपर काफी केस थे। लोगों ने हद से बाहर जाकर कन्या भ्रूण हत्या के पाप किए। जिसके परिणामस्वरूप लिंगानुपात ९५३ से लेकर ९० हो गया। पहले की स्थिति थी -

हाय नारी अबला, जीवन की यह कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी

प्राचीन समय में नारियों की स्थिति अत्यंत दयनीय

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

भी पुरुष प्रधानता के कारण वे नारियों पर अपना प्रभुत्व जमाते। यह स्थिति इतनी बढ़ गई कि सरकार को इसके लिए नियम व कायदे बनाने पड़े। क्या विश्वगुरु भारत में कन्यों की सुरक्षा के लिए कानून का सहारा लेना पड़ा? यह स्थिति शर्मनाक है। प्राचीन स्थिति के कारण ही यह प्रथा इतनी बढ़ी है। अगर उस समय कोई नियम न बनाए गए होते तो ऐसी स्थिति आ जाती आज कि विवाह के लड़कियों की कमी हो जाती और लड़कों को दहेज देना पड़ता।

वर्तमान स्थिति →

प्राचीन समय से आज लड़कियों की स्थिति मे सुधार आया है। वे हर क्षेत्र मे आगे आ रही हैं। लड़कों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं बल्कि उनसे दो कदम आगे चल रही है।

ये आज की नारी है
अबला नहीं चिंगारी है।

प्रत्येक क्षेत्र मे कन्याओं ने अपनी प्रतिभा सिद्ध की है। यह स्थिति कन्या भ्रूण स्थिति मे भी सुधार ला रही है। यह स्थिति प्राचीन समय से तो काफी बेहतर हुई है लेकिन फिर भी आज ग्रामीण इलाकों व पिछड़े क्षेत्रों मे कई लोग कन्या भ्रूण हत्या करते है। अखबारों मे आए दिन ऐसी खबर आती रहती है। हमे इस समस्या को जड़ से मिटाना होगा। भारत देश आज भी नारी की स्थिति मे कई देशों मे पीछे है। जबकि न्यूजीलैंड, अमेरिका जैसे देशों मे भारत से

अंक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

श्रेष्ठ स्थिति है जिसका कारण यह है कि वहाँ कन्या भ्रूण हत्या जैसे कार्य नहीं है।

वर्तमान स्थिति सुधरी है लेकिन अभी भी भेदभाव पूरी तरह से मिटा नहीं है।

5. निराकरण के उपाय

कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए सरकारी नियम काफी नहीं है क्योंकि इसके बावजूद भी स्थिति जस की तस बनी हुई है। इसे रोकने के लिए नारी सशक्तीकरण की आवश्यकता है। समाज में व्याप्त लड़का लड़की के बीच के भेदभाव को मिटाने की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रसार के द्वारा कन्या-भ्रूण हत्या को काफी हद तक रोका जा सकता है क्योंकि इसके कारण लोगों को नयी सोच मिलेगी। लड़कियों को भी आगे बढ़ने और अपनी प्रतिभा सिद्ध करने का अवसर मिल सकेगा। आज हमारे सामने ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें नारी ने अपना वर्चस्व स्थापित न किया हो। ऐसे प्रत्यक्ष उदाहरण लोगों को कन्या-भ्रूण हत्या को रोकने के लिए कारगर सिद्ध होते हैं। लोगों को ऐसे उदाहरण बताए जाने चाहिए जैसे प्रतिभा पाटिल, सोनिया गाँधी, इन्दिरा गाँधी, कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, वसुन्धरा राजे, किरण बेदी, ऐश्वर्या राय, झाँसी की रानी। इत्यादि। लोगों को यह बताना होगा कि समाज में नारी का कितना महत्व है। कन्या-भ्रूण हत्या अपराध है। जिसके कारण उन्हें कैद की सजा तक हो सकती है। यदि कोई इस कार्य में लिप्त पाया गया तो उसे कड़े से कड़ा दंड देना चाहिए। इसे रोकना आज बहुत आवश्यक बनता जा रहा है। जिसके लिए

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

निशुल्क शिक्षा, कन्या जन्म पर दी जाने वाली राशि, महिलाओं का आरक्षण, जागरूकता अभियान इत्यादि कुछ सफल उदाहरण है।

☆ **उपसंहार**

नारी के बिना हम संसार की कल्पना नहीं कर सकते हैं। नारी जन्मदायिनी है फिर भी लोग न जाने क्यों? बेटियो को बोझ मानते है। बेटियाँ बेटे से कई गुना आगे है। आज वही बेटा अपना बूढ़े माँ बाप को वृद्धाश्रम छोड़ आता है वही बेटियाँ जिनके बुढ़ापे का सहारा बनती है। कन्याभ्रूण हत्या एक ऐसा अभिशाप है जिसे हमें समाज की जड़ से समाप्त करना है। तभी हमारे देश दोगुनी गति से विकास कर पाएगा।

कन्या तो ईश्वर का वरदान है जिसे सभी को खुशी खुशी स्वीकार करना चाहिए न कि कन्या भ्रूण हत्या कर पाप करना चाहिए।

दुनिया के सबसे खूबसूरत शब्द

"मुबारक हो बेटी हुई है"

समाप्त